



## लाजो का उद्धार-5

“इसको बिस्तर पर ले जाओ !” रेशमा ने आदेश दिया। वह अपने आपको गजब ताकतवर महसूस कर रही थी। मैंने लाजो को तनिक घुमाया, अपना बायाँ हाथ उसकी पीठ के पीछे डाला और झुककर दायाँ हाथ पैरों के पीछे डाल उसको उठा लिया। घुटनों के मुड़ते ही उसने गिरने से बचने के लिए अपनी गोरी

”  
[...] ...

**Story By:** (happy123soul)

**Posted:** Tuesday, July 16th, 2013

**Categories:** [जीजा साली की चुदाई](#)

**Online version:** [लाजो का उद्धार-5](#)

## लाजो का उद्धार-5

“इसको बिस्तर पर ले जाओ !” रेशमा ने आदेश दिया। वह अपने आपको गजब ताकतवर महसूस कर रही थी।

मैंने लाजो को तनिक घुमाया, अपना बायाँ हाथ उसकी पीठ के पीछे डाला और झुककर दायाँ हाथ पैरों के पीछे डाल उसको उठा लिया। घुटनों के मुड़ते ही उसने गिरने से बचने के लिए अपनी गोरी बाँहें मेरी गर्दन में डाल दी।

फूल सी हल्की नहीं थी वो ! थी तो रेशमा की बहन ही। मुझे खुशी हुई कि वह संभोग के धक्कों को सह लेगी।

रेशमा दो नंगों के पीछे चलती बेडरूम तक आई।

“डू फुल जस्टिस टु हर (उसके साथ पूरा इंसाफ करो)।” कहकर उसने हमारे पीछे दरवाजा बंद कर दिया।

आगे बंद कमरे में लाजो के संग क्या हुआ :

दरवाजा बंद होने की आवाज उस शांत कमरे में आत्मा के अंदर तक गूँज गई। मैं खड़ा रह गया। पीछे लौटने का रास्ता सदा के लिए बंद हो गया था लाजो के लिए। रेशमा ने मुझे कितना बड़ा तोहफा दिया था— खुद अपनी बहन ! नंगी करके ! अब मैं उसे चो... सोचकर मेरे लिंग में फुरहुरी दौड़ गई ! कितनी बड़ी बात !!

लाजो मेरी चंगुल में थी। पंख नुची मुर्गी की तरह, चाकू खाने को तैयार। बिस्तर के बीच में बिछा सफेद तौलिया उसके खून का स्वाद चखने के लिए पुकार रहा था।

रेशमा को पूरा यकीन था कि लाजो की योनि अब भी खून बहाएगी ? पता नहीं ! मुझे तो नहीं लगता था !

मैं आगे बढ़ा और उसे बिस्तर पर लिटाने के लिए हाथ आगे बढ़ाए पर उसकी बाँहें मेरी गर्दन में कस गई, अपने सामने के हिस्सों को मेरी नजरों से बचाने के लिए उसने खुद को मुझमें चिपका लिया। मैंने अपने दाहिने हाथ में उसके मुड़े घुटनों को उतारना चाहा तो वह दोनों पैरों को मेरी कमर के दोनों तरफ लपेटकर मुझमें छिपकिली की तरह चिपक गई। अपना चेहरा उसने मेरे गले में घुसा लिया।

मुझे उसकी इस अदा पर प्यार आया, मैंने हँसकर उसके बालों को चूमा और उसके नितम्बों के नीचे हाथ डालकर उसे सम्हाल लिया। उसके दोनों पैर पीछे मेरी जाँघों पर लिपटे थे।

मैंने उसके पीठ के पीछे झाँका- रीढ़ की सीधी हड्डी, पतली कमर और मेरे हाथ पर दबने से नितम्बों के उभरे मांस। नितम्बों के बीच शुरू होती दरार का आभास। औरत का जिन्दगी भर मोहित और उत्साहित किए रहने वाला शरीर। त्वचा से त्वचा का चिकना, मखमली, मुलायम स्पर्श। हाथों और पाँवों की आतुर जकड़। भगवान करे यह जकड़ कभी ढीली नहीं हो।

मैंने उसके कटाव के ऊपरी हिस्से में अंदर की गर्म गीली कोमलता में अपने लिंग की फिसलन महसूस की और पता नहीं कैसे उस वक्त मुझे लगा मैं उसे प्यार करने लगा हूँ। लगा कि इस एहसास से अलग कोई प्यार हो ही नहीं सकता, इस एहसास के बाद उससे प्यार होने से बचा नहीं जा सकता।

मेरे गले पर उसकी गर्म साँसों की टकराहट और मेरी छाती पर उसके उभरे मांसल वक्षों का दबाव, पेट पर उसके मुलायम रेशमी पेट का स्पर्श, कमर में उसकी जाँघों का मांसल बंधन, मेरी धड़कन से टकराती उसकी धड़कन - सब इतने मग्न कर लेने वाले थे कि मैं उससे

एकाकार होने के लिए आतुर हो उठा। दो कदम चलता बिस्तर के कोने तक आया और घूम कर उस पर थोड़ा सा चूतड़ टिकाकर बैठ गया। पीछे लिपटी उसकी ँड़ियों को उठाकर अपने पीछे बिस्तर पर रख लिया।

गोद में आकर उसकी टुड्डी और कंठ मेरे मुँह के सामने आ गए। कंठ के अंदर गटकने की सरसराहट ने मेरे चूमते होंठों को गुदगुदाया। नर्म गले के नीचे कॉलर बोन की कठोर सतह, पसीने का नमकीन स्वाद। उसके शरीर की मादक गंध। मैंने और गरदन झुकाकर उसके स्तनों को चूसना चाहा पर वह मुझसे चिपटी थी और नीचे उसकी गीली फूल की पंखड़ियों में सरकते लिंग की असह्य उत्तेजना में इतना धैर्य मुश्किल था। मेरे कान में उसकी सिसकारियों और तेज गर्म साँसों ने मुझे उत्साहित किया और मैं उसकी योनि के रास्ते को अपने लिंग की सीध में लाने के लिए पीछे झुक गया।

वह अपने स्तनों के प्रकट हो जाने की लज्जा में अलग नहीं होना चाह रही थी, जबकि मैंने उन्हें उनकी पूरी भव्यता में उन पर चमकते साँवले घेरे के बीच उठे चूचुकों के साथ उसकी बहन के सामने देखा था। उसकी लाचार और लज्जित मुद्रा का सौंदर्य मेरे मन में पैठ गया था।

मैंने उसे चूमते हुए अपने बदन से लिपटी उसकी बाँहों को धीरे-धीरे ढीला किया और उसके चूतड़ों के नीचे हाथ डालकर अलगाया। मुझे खुशी हुई कि उसने बाधा नहीं डाली। सामने प्रकट हुए स्तनों पर मैंने जानबूझ कर उन पर कोई हरकत नहीं की, नहीं तो वह फिर शर्म से लिपट जाती।

ढीला होकर अलग बैठते ही मेरे लिंग पर उसका भार पड़ा और लिंग उसके जांघों के बीच की दरार को लम्बाई में ढकता हुआ उसमें धँस गया। मैंने लाजो को बाँहों में कसकर दबा लिया। उसकी योनि और गुदा के बीच की नाजुक चमड़ी लिंग की कठोर सतह पर खिंचकर फटने लगी और लाजो कराहकर मेरी गोद में और आगे खिसक गई।

मुझे उसके दर्द पर खुशी हुई। मेरे मन में उसके लिए कोमलता और क्रूरता दोनों के भाव एक साथ आ रहे थे। आज असल मर्द का स्वाद ले रही हो, दर्द तो होगा ही। और कैसे कैसे दर्द सहने पड़ेंगे, देखना। अभी तो उस असली अंदर प्रवेश का, असल बलि चढ़ने का दर्द तो बाकी ही है। धीरे-धीरे रेतकर प्राण निकालूंगा। मर्द केवल मजे की चीज नहीं है। मगर पर इस दर्द को पाने के बाद इस दर्द को पाने के लिए रोओगी।

मैंने उसकी दोनों बगलों में हथेली डालकर उसे गोद से थोड़ा उठाया और एक बाँह से उसको थामकर दूसरे हाथ से उसके नितम्बों के नीचे उसकी योनि का छेद ढूँढने लगा। मैं समझ सकता था कि वह मुझे बाथरूम से निकलते समय नंगा देखने के बाद पूरे कपड़ों के उतरने तक कितनी देर से उत्तेजित अवस्था में रही होगी। पूरी चूत डबडबा रही थी और लिंग उसमें फिसल रहा था। मेरी उंगलियां भीग गईं।

उस अनमोल रस को बाद में चखूँगा !

मैंने उसकी तहों के बीच छिपी योनि का द्वार ढूँढ निकाला और लिंग को उसमें निर्दिष्ट करने लगा। लाजो मेरी गर्दन पर भार डालकर लिंग से योनि को बचाने की कोशिश करने लगी। पर वह बेसहारा थी, आगे से हाथ निकाल नहीं सकती थी और पीछे उसके पाँव सीधे होकर बिस्तर पर रखे थे।

मैंने एक शैतानी की, हाथ बढ़ाकर सिरहाने से तकिया खींचा और अपनी पीठ पीछे उसकी एड़ियों के नीचे घुसा दिया। उसकी एड़ियाँ और उठ गईं और वह उन पर कोई भार लेने में असमर्थ हो गई। मेरे उत्सुक लिंग को प्रवेश द्वार मिल गया और मैंने उसे वहीं टिका दिया। अब उसे अपने से अलग करना जरूरी था, ताकि अंदर का रास्ता लिंग की सीध में आ सके। मैंने हाथ पीछे ले जाकर तकिये पर उसके पाँव जकड़े और बाएँ हाथ को ढीला छोड़ते हुए पीछे झुक गया। लाजो पाँव उठे रहने के कारण आगे झुक नहीं सकती थी। उसने मुझे छोड़ दिया और सीधी बैठ गई। योनि की लाइन लिंग की लाइन में मिल गई और लाजो

अपने भार से ही उसपर धँसने लगी। तलवार म्यान में समाने लगी।

मैंने चाहा नहीं था उसमें इस तरह का प्रवेश। मैंने तो खूब रोमैंटिक मिलन का ख्वाब देखा था। उसे बिस्तर पर लिटा कर, स्वयं उसके कपड़े उतारते हुए, उसे खूब चूमकर चूसकर गर्म करने की कल्पना की थी। मगर लाजो की स्थिति को देखते हुए मुझे यही स्वाभाविक लगा। उसकी अपमानित और असहाय अवस्था में थोड़ा बल प्रयोग के साथ संभोग ही सही रहेगा।

और यह भी कम मीठा नहीं था। लाजो किसी कुँआरी कन्या जैसी कसी हुई लग रही थी। शायद उसका पति छोटा था और मेरा यूँ भी सामान्य से थोड़ा ओवरसाइज। लाजो ने मेरी जांघों पर हाथ टिकाकर उसपर भार डालकर बचने की कोशिश की थी पर मैंने पीछे झुककर पीठ से उसकी एड़ियों को दबा दिया। उसकी कलाइयों को कसकर पकड़ा और फूल-सा उठा दिया। उसने अपने सामने स्तनों को ढकने के लिए जोर लगाया पर मैं आराम से अपने सामने खुले उस मजेदार दृश्य का पान करता रहा। साथ में मैं कमर से हल्के हल्के झटके दे रहा था। वह अनायास मुझमें सरकती जा रही थी।

स्वर्ग में प्रवेश भी इससे आनंददायक होता होगा क्या ?

पर यह अभी भी आधा ही था, और इसी में उसके चेहरे पर दर्द की रेखाएँ उभर रही थीं। मैं फैलने के लिए उसे ज्यादा समय नहीं दे रहा था, बस प्रवेश की गति को नियंत्रित किए था। अब पूर्ण प्रवेश का आश्चर्य देने के लिए उसके पैरों को मोड़ना था। मैंने उसे खुद से चिपकाया और पीछे से उसके पैरों को निकालते हुए बिस्तर पर पीछे खिसका और घूमते हुए उसे झटके से अपनी दूसरी ओर गिरा लिया। इस काम में मेरा लिंग उसकी योनि से बाहर निकलने को हो आया। मैंने उसे वापस अंदर भेजा और अंदर धँसाएँ धँसाएँ ही उसके नितम्बों को खींचकर तौलिये पर ले आया।

लेकिन इस उठापटक में वह सचेत हो गई और विरोध करने लगी। मैंने अपनी छाती पर उसके कुछ कोमल मुक्कों का मजा लिया फिर उसके हाथ पकड़ लिए। उसके ऊपर सीधा हो गया और अपने शरीर का पूरा भार उसके ऊपर छोड़ दिया। मैंने उसके माथे पर अपना सिर रख दिया और अपनी साँसों को नियंत्रित करने लगा।

मेरे भार के नीचे दबी वह कुछ क्षणों तक कसमसाती रही। कसमसाने के दौरान उसकी योनि मेरे लिंग पर और सख्ती से कसकर बेहद नशीली रगड़ दे रही थी। ऐसा कुछ देर और चलता तो मैं शायद स्वलित ही हो जाता। लेकिन लाजो शांत पड़ गई। मैंने धीरे धीरे आगे बढ़ने का निश्चय किया ताकि पहले न झड़ जाऊँ।

मैं लाजो के विरोध को अब जीत चुका था। उसने अपने अंदर मेरी मौजूदगी कबूल कर ली थी हालाँकि बीच बीच में विरोध करके हार से इनकार करने की कोशिश कर रही थी। अब यहाँ से मुझे उसको राजी करने तक की दूरी तक लाना था।

उसके अंदर धँसे लिंग पर से ध्यान हँटाते हुए मैंने उसके चेहरे को हाथों से पकड़कर सीधा किया और उसे देखने लगा। सुंदरता पर उत्तेजना और शर्म की लाली। जैसे फूलों के बगीचे पर सुबह के सूरज की लाली। हाय... मैंने उस लाल चेहरे को दबोचा और उसके मुँह पर अपना मुँह गाड़ दिया।

लाजो के मुँह का स्वाद ! आह, स्वर्ग था ! लार की हल्की सोंधी मिठास और मुँह के अंदर की हवा में फूल सी गंध। उसने साँस लेने के लिए मुँह उठाया तो मैंने शेर के जबड़ों की तरह उसके गले पर मुँह जमा दिया और उसके नमकीन सुगंधित पसीने को जोर जोर चूसने लगा। वह हिरनी-सी छटपटाने लगी। मैंने सिर उठाकर उसकी छटपटाहट देखी और खुश होकर पुनः उसके मुँह पर हमला कर दिया। उसके लार को अपने मुँह में खींचकर पुनः उसके मुँह में ठेल दिया। उसके चेहरे को जकड़े उसके मुँह पर मुँह जमाए रहा जब तक कि वह उसे पी नहीं गई।

मन में खयाल आ गया कि ऐसे ही मैं इसे अपने लिंग से पिलाउंगा। आवेग में भरकर मैंने उसे बार-बार चूमा। फिर से उसके लार को चूसा और उसे पिलाया। उसका विरोध घटने लगा और फिर कभी मैं, कभी वो एक दूसरे को पीने लगे।

कुछ देर में उसकी बाँहें मेरी गर्दन में कस गईं और उसने अपने सामने के हिस्सों को मेरी नजरों से बचाने के लिए खुद को मुझमें चिपका लिया। क्या मजेदार बात थी। कहाँ तो नीचे अपनी योनि में मेरे लिंग को समाए थी और कहाँ ऊपर अपनी छाती दिखाने में भी शर्मा रही थी। उसने अपना चेहरा मेरे गले में घुसा लिया।

मैंने हँसकर उसके बालों को चूमा और उसके नितम्बों के नीचे हाथ डालकर उसे सम्हाल लिया। उसने दोनों पैर मेरी जांघों के पीछे लपेट दिए।

धक्के लगाने की तीव्र इच्छा को मैं किसी तरह दबाए था पर जब उसने अपने पैर मेरी जांघों पर लपेट दिए तो मारे खुशी और उत्तेजना के मैंने खुद को रोकने की कोशिश छोड़ दी। मैं उसके बदन पर आगे पीछे नाव की तरह हिचकोले खाने लगा। लिंग उसकी मखमली तहों में फिसलने लगा। ऐसी कसावट भरी मादक रगड़ थी कि शादी के बाद के शुरुआती दिनों की याद आ गई।

मैं उसके बदन पर प्यार के हल्के हिचकोलों को क्रमशः सम्भोग के धक्कों में बदलने लगा। योनि में अंदर फिसलते लिंग के आगे-पीछे होने की लम्बाई बढ़ने लगी। लाजो का मेरी पीठ पर पहले प्यार से घूमता हाथ आवेग में भरकर नाखूनों के खरोंच छोड़ने लगा। खरोंच के दर्द को मैं धक्के मारकर भुलाने की कोशिश करता। लाजो कभी दर्द से, कभी आनंद से कराह उठती। रह-रहकर उसकी बाँहें और जांघें मेरे शरीर पर भिंचने लगी। मुझे लगा वह अब अपने रंग में आ रही है। सही औरत का एकदम गर्म उत्तेजित रूप, जिसे चरम सुख की पूर्ण अवस्था तक पहुँचाना किसी भी पुरुष का दायित्व होता है।



मैंने उस दायित्व को पूरा करने के लिए गति बढ़ा दी। नरम, नाजुक लाजो को अपनी हट्टी-कट्टी बहन की तरह जोरदार धक्कों की जरूरत नहीं थी। वह आहें भर रही थी और चरम सुख के करीब थी। एक मन हुआ कि अभी लिंग निकालकर उसको इस अंतिम सुख के लिए तड़पाऊँ, पर वह बेचारी इतनी देर से उत्तेजना और अपमान की यंत्रणा भुगत रही थी। हमने उसपर बहुत अत्याचार किया था। अब उसको न्याय देना जरूरी था। मैंने उसकी जांघों को फैला दिया ताकि लाजो का योनिच्छिद्र और चौड़ा हो जाए और उसको धक्कों में दर्द कम हो। लाजो बहुत कसी हुई थी। शायद ज्यादा संभोग नहीं कर पाई थी। शुक्र था, उसका अपना गीलापन उसकी मदद कर रहा था।

रेशमा से अलग, एक नया शरीर, नया अनुभव।

पेडू से पेडू टकराने की पनीली फच फच आवाजें। कमरे में गूँजती आहें... ओ माँ... ओओओओह... आआआह... !

रेशमा को तो सुनाई पड़ ही रहा होगा ना ! शायद वो तो कमरे के दरवाजे पर कान लगाए खड़ी होगी !

अभूतपूर्व आनन्द !

‘फच’ ‘फच’ ‘चट’ ‘चट’ को लांघती एक लम्बी सिसकारी। मेरे कंठ से भागती हुई ‘हुम्म’ ‘हुम्म’... मैंने लाजो को लाल आँखों से देखा। उसकी गुर्राहटें और फिर खुले मुख से एक लम्बी आआआआह ! उसने मुझे एकदम से भींच लिया और कंधे में दाँत गड़ा दिए। रस्सी की तरह बदन मरोड़ने लगी। मैंने उसको अपनी जाँघों के बीच जकड़ा और पेडू से पेडू को खूब दबाकर मसलने लगा ताकि भगांकुर की कली कुचले। इसके साथ ही मुझे लिंग पर उसकी योनि की हिचकियाँ महसूस होने लगीं।

थोड़ी ही देर में उस पर एक रस की फुहार आई। चरम सुख की मथानी से मथकर निकला रस। लाजो बेसुध होने लगी।

मेरा भी अंत आ गया था। मैं जानता नहीं था उसने गर्भ निरोध का क्या उपाय किया था। उसे किसी परेशानी में नहीं डालना चाहता था। इसलिए मैंने लिंग को बाहर निकाल लिया और उसे हाथ से झटके देते हुए वहीं तौलिये पर वीरगति को प्राप्त हो गया।

कुछ क्षण उसके आनन्द में डूबे चेहरे को देखता रहा। उसके सुंदर स्तनों पर, जांघों के बीच अंतरंग बालों पर, पूरे शरीर पर नजर डाली, फिर उसकी बगल में लेट गया।

मैं बेहद खुश था। जिंदगी किसी सुंदर सपने में थी।

मुझे रेशमा का ख्याल आया, मैंने एक चादर खींचकर लाजो को ओढ़ाया और किवाड़ पर हल्की दस्तक दी, रेशमा ने पलक झपकते ही दरवाजा खोल दिया।

“हो गया ना ?” उसने पूछा।

“हाँ।” मैंने बाहर निकलते हुए सुख से गदगद स्वर में कहा।

“पूरा... कर दिया न उसको ?”

मैंने सिर हिलाया।

रेशमा अंदर घुसी।

“सोई है।” मैं पीछे से फुसफुसाया।

लाजो के चेहरे पर तृप्ति थी। रेशमा ने थोड़ा सा चादर उठाकर देखा, अंदर से उसके स्तन

झाँक रहे थे।

लाजो की निद्रा टूट गई। बहन को देखते ही उसने चादर खींचकर मुँह ढक लिया, रेशमा ने चादर के ऊपर से ही उसको चूम लिया।

## Other stories you may be interested in

### साली ने घरवाली का सुख दिया

मेरी पिछली कहानी मेरी पहली गांड की चुदाई पड़ोसी अंकल के साथ आपने पढ़ी. मैं आज एक और नई कहानी के साथ उपस्थित हूँ, आशा करता हूँ कि मेरी कहानी आप लोगों को ज़रूर पसंद आएगी, आज मैं मेरी और [...]

[Full Story >>>](#)

### मेरे लन्ड को मेरी साली पसंद आ गयी

नमस्कार मित्रो, मेरा नाम भरत है। मैंने अन्तर्वासना पर लगभग हर एक कहानी पढ़ी है। अन्तर्वासना पर मैं पहली बार कुछ लिख कर भेज रहा हूँ जिसमें मुझे आप सबकी मदद की आवश्यकता है। वैसे तो मैं अच्छे खासे शरीर [...]

[Full Story >>>](#)

### यात्रा में सलहज संग चुदाई

मैं चन्दन सिंह, उम्र 58 साल नौकरी करने के बाद रिटायर्ड हो चुका हूँ. अब ज्यादातर समय खाली ही गुजरता है. बीच-बीच में कभी धार्मिक यात्रा पर निकल जाता हूँ. इस साल कुम्भ मेले के दौरान मेरी विधवा सलहज शान्ति [...]

[Full Story >>>](#)

### बड़ी साली की चुदाई दे दनादन

नमस्कार दोस्तो, मैं अंतर्वासना साईट का नियमित पाठक हूँ. यह मेरी पहली सेक्स कहानी है, अगर कोई गलती दिखे, तो प्लीज़ माफ कर दीजिएगा. मेरा नाम देव है और मेरी उम्र 28 साल है. मैं हरियाणा के रेवाड़ी जिले के [...]

[Full Story >>>](#)

### मेरी सलहज की मदभरी जवानी के मजे-1

नमस्कार दोस्तो, कृपया अपने अपने लंड हाथ में थाम कर बैठिए. आज मैं अपनी पहली सच्ची कामुक घटना बताने जा रहा हूँ. यह बात उन दिनों की है, जब मेरी शादी हुई थी. उस वक्त तो सब नार्मल चल रहा [...]

[Full Story >>>](#)

